*International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)*
*ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714*
*www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 12 December. 2021 || PP. 39-41*

# स्वाधीनता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी (अलवर रियासत के संदर्भ में)

डॉ. मीना अम्बेष
*सह–आचार्य*
*इतिहास*
*बाबू शोभाराम राजकीय*
*कला महाविद्यालय, अलवर*

प्राक ब्रिटिश भारत में संभवतः वैदिक युग को छोड़कर नारी पुरूष की अधीनता में ही रहती आई है। धर्म और विधि में पुरूषों और स्त्रियों के अधिकारों को समान नहीं माना गया था।

यद्यपि बौध धर्म जैसे सुधार आंदोलनों ने स्त्री की स्थिति में सुधार लाने के कुछ प्रयास अवष्य किये थे लेकिन स्त्री के प्रति सदियों से जो सामाजिक और कानूनी अन्याय होते रहते थे उनके निवारण के लिए सक्रीय आंदोलन ब्रिटिश काल में ही चल सके। यद्यपि प्राक ब्रिटिश भारत में सुलताना रजिया बेगम, चॉद बीबी, नूरजहाँ, अहल्याबाई होल्कर जैसी अभिजातवर्गीय स्त्रियों ने राजनीति में भाग लिया लेकिन राजनीति में स्त्रियों का तीव्र प्रवेश खासकर 1919 के बाद भारतीय इतिहास की अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना है।

ब्रिटिश काल में महिलाओं को मिले मताधिकार चाहे वो सीमित ही था, इसके अलावा महात्मा गांधी लगातार राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी के लगातार आह्वान से स्त्रियों ने घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी भूमिका दर्ज करवाई। बड़ी तादाद में राजनीतिक जन आंदोलन में भाग लेती हुई, शराब की दुकानों पर धरना देती हुई, प्रदर्षनों में मार्च करती हुई, जेल जाती हुई, लाठी और गोलियों का सामना करती हुई स्त्रियों का दृश्य भारतीय इतिहास में अभूतपूर्व था। अब भारतीय स्त्रियाँ अपनी सदियों पुरानी सीमाओं का अतिक्रमण कर आगे बढ़ गई, पहले जहाँ वह आज्ञाकारी घरेलु नौकरों जैसी थी लेकिन अब वे नागरिकों के रूप में अपना मत देने और बड़े राजनीतिक आंदोलनों में भाग लेना आरंभ कर दिया। सरोजनी नायडू, कमला देवी चट्टोपाध्याय, विजयलक्ष्मी पंडित जैसी कुछ महिलाएँ तो अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध नेता सिद्ध हुई। (1)

अलवर की महिलाओं का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान– राष्ट्रीय स्तर में जहाँ सरोजनी नायडू, कमला देवी चट्टोपाध्याय, विजयलक्ष्मी पंडित जैसी महिलाएँ राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी भूमिका को दर्षा रही थी, वहीं राजस्थान की रियासत अलवर में भी सुषीला त्रिपाठी, शान्ति गुप्ता, कलावती शर्मा, रामेष्वरी देवी, शान्ति गोठड़िया, कमला जैन, रामप्यारी, सत्यवती अग्रवाल, विमला शर्मा, शोभा भार्गव, उमा माथुर, कमला देवी डाटा, कौषल्या देवी आदि ने राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी भागीदारी दर्ज करवाई। अलवर के स्वतंत्रता सेनानी लक्ष्मण स्वरूप त्रिपाठी की धर्मपत्नी सुशीला त्रिपाठी ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान 1933 में दिल्ली में दफा 144 तोड़ने के जुर्म में 6 माह की सजा भुगती, वहीं 1938 ई. में अलवर प्रजामण्डल की स्थापना के पश्चात हुई बैठक की अध्यक्षता सुशीला देवी ने की तथा महिलाओं को राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ने का आह्वान किया। 16 मार्च 1938 ई. तथा 9 अप्रैल 1938 ई. को पुरजन विहार में आयोजित जन सभाओं में सुशीला देवी ने शिक्षा के महत्व तथा राष्ट्रीय उत्थान आदि विषयों पर अपने विचार रखे। वहीं महिलाओं में जागृति लाने का उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के उद्देश्य से महावर (महावर या वैश्य महिलाओं) महिला मंडल तथा महिला जागृति संस्था की स्थापना की। इन संस्थाओं में प्रत्येक सप्ताह हरिकीर्तन के लिए महिलाओं को बुलाकर, कीर्तन के साथ–साथ उनमें राष्ट्रीय भावना व अंग्रेजों व सामन्ती शासन की बुराईयों के प्रति अवगत कराया जाता था। (2)

इसी प्रकार 25 अगस्त 1928 को बहरोड़ तहसील के ग्राम घीलोट में जन्मी लाला काषीराम की पुत्री शान्ति गुप्ता ने जहाँ 1942 में भारत छोड़ों आंदोलन में भाग लिया। शान्ति गुप्ता ने गांधीजी के बताये मार्ग पर चलते हुए आजीवन खादी के वस्त्रों को धारण करने का निष्चय किया। समाज को बदलने की इच्छा रखने वाली शान्ति गुप्ता ने 1943 ई. में राष्ट्रीय आंदोलन के सक्रीय कार्यकर्ता नारायण दत्त गुप्ता से बेपर्दा विवाह कर समाज को पर्दा प्रथा के विरोध में खड़ा होने का आह्वान किया। शांति गुप्ता ने षिक्षा को महिलाओं के विकास का अधार मानते हुए महिलाओं को साक्षर करने के प्रयास किये। अपने पिता लाला काशीराम के मकान में स्त्रियों को शिक्षत करने के लिए एक कमरे का स्कूल खोला। हरिजन सेवक संघ द्वारा हरिजन बस्ती में चलाये जाने वाले स्कूल में स्वयं शांति गुप्ता रात्रि में मिट्टी के तेल की लालटेन की रोशनी में हरिजन महिलाओं को पढ़ाती थी।

1946 में पिता, पति व जेठ के जेल जाने पर श्री देश पाण्डे तथा श्रीमती रमा पाण्डे के निर्देशन में रहकर प्रजामण्डल द्वारा चलाये गये सभी आंदोलनों में सक्रीय रूप से भाग लिया। भारत छोड़ों आंदोलन के समय पेहल, मुण्डावर, खैरथल, रसगण आदि गाँवों में कस्तूरबा ट्रस्ट के अन्तर्गत संचालित ग्राम सुधार, नारी उत्थान आदि का कार्य किया।

इसी प्रकार अलवर प्रजामण्डल की सक्रीय महिला कार्यकर्ता कलावती शर्मा जिनका जन्म जनवरी 1923 में राजगढ़ कस्बे में हुआ ने महिलाओं में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के लिए 1946 ई. में महिला मण्डल की स्थापना की तथा अलवर के साथ ही थानागाजी, बानसूर व लक्ष्मणगढ़ में समाज कल्याण खण्ड खुलवाये। (3)

1939 में कलावती शर्मा रामगढ़ के कन्या मिडिल स्कूल में अध्यापिका बनी। 1942 के भारत छोड़ों आंदोलन में सक्रीय रहकर भाग लिया जिसमें पर्चे बांटना, पोस्टर लगाना तथा क्रांतिकारियों तक गुप्त संदेश पहुँचाने का कार्य किया। 1945 से 1946 तक कस्बे और गाँवों में प्रजामण्डल की गतिविधियों का प्रसार–प्रचार किया गया। भारत विभाजन के दौरान गठित सेवादल के माध्यम से शरणार्थियों को सरकार द्वारा आयोजित शरणार्थी षिविरों में पहुँचाने का कार्य भी कलावती देवी शर्मा द्वारा किया गया।

इसके अलावा रामेश्वरी देवी, जिनका जन्म अलवर जिले के प्रतापगढ़ गांव में हुआ। इन्होंने अन्य महिला कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर अपने मकान में अनपढ़ महिलाओं के पढ़ाने के लिए साक्षरता केन्द्र संचालित किया तथा खादी अपनाने के लिए कताई कक्षाएँ चलाई। 1943 में रामेश्वरी देवी ने खैरथल एवं तिजारा में कॉंग्रेसी महिलाओं का सम्मेलन और खादी प्रदर्शनी में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा महिलाओं को खादी पहनने के लिए प्रेरित किया।

इसके अलावा शान्ति गोठड़िया ने भी महिलाओं को जागरूक करने तथा पर्दा प्रथा का बहिष्कार करने तथा प्रजामंडल के मंच से खड़े होकर भाषण देकर स्वाधीनता आंदोलन में अपना योगदान दिया। इसी प्रकार कमला जैन ने जगरानी सक्सैना के साथ महिला जागृति संघ बनाकर थोडी देर हरिकीर्तन बाद में कर उन्हें सामंती शासन के जुल्मों तथा अंग्रेजों के विरुद्ध होने वाले राजनीतिक गतिविधियों की जानकारी देने का कार्य किया। सत्याग्रह करने के लिए आप जत्थे के लिए महिलाओं को एकत्रित किया करती थी और सत्याग्रह करने के लिए उन्हें प्रेरित करती थी। आपने अन्य महिलाओं के साथ सत्याग्रह में भी कई बार भाग लिया । इस आंदोलन में भाग लेने के कारण इनको कई बार ट्रकों में भरकर अन्य सत्याग्रही महिलाओं के साथ जंगलों में छोड़ा गया क्योंकि सामंती सरकार के पास ना तो महिलाओं को गिरफ्तार करने के लिए महिला पुलिस थी और ना ही उन्हें जेल में रखने के लिए स्थान था अतः दिन में तो उन्हें जेल में रखते थे और दिन छुपने से पहले दूरदराज के जंगलों में छोड़ देते थे। इसी प्रकार अलवर के स्वाधीनता सेनानी बाबू शोभाराम की पत्नी श्रीमती रामप्यारी ने 22 वर्ष की उम्र में ही खादी पहनना आरंभ कर दिया और 25 वर्ष की आयु में पर्दा प्रथा का त्याग कर दिया जिस पर परिवार रिश्तेदार और बिरादरी में बहुत ही आलोचना हुई लेकिन वह जरा भी विचलित नहीं हुई यद्यपि रामप्यारी अधिक पढ़ी–लिखी नहीं थी तथापि महिला जागरण और अन्य कार्यक्रमों में अन्य महिलाओं को उनके द्वारा भरपूर सहयोग दिया गया। अगस्त 1946 के गैर जिम्मेदार मिनिस्ट्रो कुर्सी छोड़ो आंदोलन के समय अपनी एकमात्र नन्ही बच्ची को अपनी बहन के पास छोड़ कर उस आंदोलन में हिस्सा लिया । सत्याग्रहियो को पानी पिलाने, उन्हें नाश्ते में गुड़ और चने की व्यवस्था करने, उसे बटवाने और यह देखने में कि कोई रह तो नहीं गया है आप पूरे दिन इन कार्यों में संलग्न रहती थी। इसी प्रकार सत्यवती अग्रवाल ने शांति गुप्ता शोभा भार्गव जगरानी आदि महिलाओं से संपर्क साध कर नारी जागृति मंडल नामक संस्था की स्थापना की और इस संस्था का जो उद्देश्य देश सेवा समाज सेवा नारी उत्थान जैसे कार्य थे और इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आपने सहयोगीयों की आर्थिक रूप से मदद की इसके अतिरिक्त महिलाओं की शिक्षा के प्रति रुचि जागृत करने और उन्हें स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से सिलाई आदि सिखाने के लिए लाला काशीराम तथा बद्री प्रसाद गुप्ता के मकानों पर केंद्र स्थापित किए इसके साथ ही साथ महिलाओं में राष्ट्रीय भावना भरने का काम भी किया । (4)

श्रीमती सत्यवती अग्रवाल सामाजिक सेवा के साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन और राजनीतिक गतिविधियों की जानकारी ही नहीं रखती थी बल्कि उसमें रुचि भी रखती थी । अलवर की सामंती सरकार के शोषण की नीति को आपके द्वारा गुना से देखा गया और इस कारण ही सत्यवती अग्रवाल द्वारा अलवर प्रजामंडल के आंदोलनों को पूरा सहयोग और समर्थन दिया गया था। इसी प्रकार विमला शर्मा द्वारा भी राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से भूमिका निभाई गई । उन दिनों जबकि विवाहित महिलाएं ही नहीं लड़कियों को भी घर से बाहर निकलने और सामाजिक कार्य में भाग लेने की खुली छूट नहीं थी लेकिन विमला शर्मा ने रमाबाई देशपांडे, कलावती शर्मा, शांति गुप्ता, शोभा भार्गव, कमला डाटा, कमला जैन और रामेश्वरी देवी आदि के साथ सत्याग्रह में खुलकर भाग लिया और धारा 144 तोड़ने और सत्याग्रह करने के जुर्म में इन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया। इसी विमला शर्मा के अलावा शोभा भार्गव ने अपने गुरु रघुवर शरण भट्ट की प्रेरणा से महिला मंडल की स्थापना करने में योगदान दिया यह संस्था प्रारंभ में सामाजिक उत्थान के लिए बनी थी उस समय साक्षरता की बहुत आवश्यकता थी। शोभा भार्गव ने राष्ट्रीय आंदोलन में खुलकर भाग लिया हड़ताल करवाना स्कूल और कॉलेजों में झंडा उठाकर नारे लगाते हुए चलना सभी मीटिंग्स में भाग लेना आदि कार्य उसके द्वारा किए गए। प्रकार उमा माथुर कौशल्या देवी ने भी राष्ट्रीय आंदोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया । कौशल्या देवी ने जागीरदारों द्वारा महिलाओं से जो बेकार ली जाती थी उन्हें काम के बदले पैसा देना तो दूर उन्हें भूखे पेट दिन भर काम करने के लिए मजबूर होने की घटना से उन्हें काफी मानसिक वेदना होती थी इसलिए कौशल्या देवी ने सामंती शासन के विरुद्ध और अंग्रेजों के विरुद्ध गांव–गांव जाकर प्रजामंडल के कार्यकर्ता के रूप में जागीर विरोधी और सामंत शासन विरोधी प्रचार और प्रसार किया साथ ही महिलाओं को जागीरी जुल्मों के विरोध में संगठन संगठित किया जिसका परिणाम यह हुआ कि इनके ससुर ने इनकी जागीरदारो विरोधी गतिविधियों से रुष्ट होकर इन्हें अपने पीहर भेज दिया।

इस प्रकार अलवर की महिलाओं द्वारा स्वाधीनता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया गया यद्यपि समाज उस समय बहुत सारी सामाजिक कुरीतियों से ग्रसित था लेकिन इन महिलाओं ने ना केवल सामाजिक उत्थान में अपनी भूमिका निभाई वरन पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची :–**

1. ए.आर. देसाई भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि पृष्ठ सं 218–224
2. फाइल नं. 34 एल/पी/46 रा.रा.अभि अलवर पृ.119
3. सैनी हरिनारायण–आजादी का आंदोलन और अलवर, अगस्त 1998 पृ. 189
4. सैनी हरिनारायण–पृ. 171–172
5. महावीर जैन, अलवर की जागृती का इतिहास